(13) Seat No: _____ No. of Printed Pages : 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A.1ST Semester EXAMINATION

MONDAY, 17-10 2016

10:00 A.M. TO 1:00 P.M.

PA01CHIN01 : Hindi Paper -1

(भक्ति काव्य)

Total Marks: 70

प्रश्न-1 कबीरदास की गुरु भक्ति की सोदाहरण चर्चा कीजिए। (17)

अथवा

'भ्रमर' शब्द का अर्थ बताते हुए सूरदास के भ्रमरगीत की विशेषताएँ बताइए।

प्रश्न-2 अयोध्याकाण्ड के आधार पर भरत का चरित्र चित्रण कीजिए। (17)

अथवा

' नागमती वियोग खंड ' के आधार पर नागमती का विरह वर्णन सोदाहरण लिखिए।

प्रश्न-3 किन्ही दो पर टिप्पणियाँ लिखिए - (18)

क. कबीर का समाज दर्शन।

अथवा

सूरदास का कृतित्व।

ख. अयोध्याकाण्ड में केवट प्रसंग।

अथवा

जायसी की काव्य भाषा।

प्रश्न-4 सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (18)

क. आयो घोष बड़ो व्यापारी।
लादि खेप गुन-ज्ञान जोग की ब्रज में आन उतारी॥
फाटक दे कर हाटक माँगत भोंरै निपट सुधारी।
धुरं ही ते खायो है लये फिरत सिर भारी॥
इनके कहे कौन डहकावे ऐसी कौन अजानी ?
अपना दूध छाड़ि को पीवै खार कूप को पानी॥
ऊधो जाहु सबार यहाँ ते बेगि गहरु जनि लावौ।
मुहँ माँग्यो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावो॥

(P.T.O)

अथवा

क . दुलहिनी गाओ मंगलचार ,
हम घरि आए हो राजा राम भरतार।
तन रति करि मैं मन रति करिहूँ , पंचतत बराती।
रामदेव मोरै पाहुनैं आए हैं , मैं जोबन मैमाती॥
सरीर सरोवर बेदी करिहूँ ,ब्रह्म बेद उचार।
रामदेव संगि भांवरि लैहूँ ,धनि धनि भाग हमार॥
सुर तैतीसूं कौतिग आए मुनिवर सहंस अठयासी।
कहै कबीर हम ब्याहि चले हैं , पुरिष एक अबिनासी॥

ख. अनहित तोर प्रिया केइँ कीन्हा। केहि दुइ सिर केहि जमु चह लीन्हा॥
कहु केहू रंकहि करौ नरेसू। कहु केहि नृपहि निकासौ देसू॥
सकऊँ तोर अरि अमरउ मारी। काह कीट बपुरे नर नारी॥
जानसि मोर सुभाउ बरोरू। मनु तव आनन चंद चकोरू॥
प्रिया प्रान सुत सरबसु मोरें। परिजन प्रजा सकल बस तोरे॥
जौ कछु कहौ कपटु करि तोही। भमिनी राम सपथ सत मोही॥
बिहसि मांगु मनभावति बाता। भूषन सजहिं मनोहर गाता॥
घरी कुघारी समुझि जियँ देखू। बेगि प्रिया परिहरहि कुवेषू॥
यह सुनि मन गुनि सपथ बडि बिहसि उठी मति मंद।
भूषन सजति बिलोकि मृगु मनहु किरातिनि फंद॥

अथवा

ख . नागमती चितउर पँथ हेरा। पिउ जो गए फिरि कीन्ह न फेरा॥
नागरि नारि काहुँ बस परा। तेइं बिमोहि मोसौ चितु हरा॥
सुवा काल होइ लै गा पीऊ। पिऊ नहि लेत लेत बरु जीऊ॥
भएउ नरायन बावन करा। राज करत बलि राजा छरा॥
करना बान लीन्हउ कै छंदू। भारथ भएउ झिलमिल आनंदू॥
मानत भोग गोपीचँद भोगी। ले उपसवा जलंधर जोगी॥
ले कान्हहि भा अकरूर अलोपी। कठिन बिछोउ जिअ किमि गोपी॥
सारस जोरी किमि हरि मारि गएउ किन खग्गि।
झुरि झुरि पांजरि धनि भई बिरह कै लागी अग्गि॥

— × —